ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 13

✻ ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

मास्टर ऑफ डिवाइन एडमिनिस्ट्रेशन (Master of Divine Administration) के बारे में हम विभिन्न लेखों द्वारा विचार कर रहे हैं ताकि इस प्रकार का दैवी कारोबार वर्तमान तथा भविष्य के जीवन में हम अच्छी रीति कर सकें। इस कारोबार के बारे में पश्चिमी दुनिया के लोगों ने अच्छी-अच्छी बातें बताई हैं जिसमें से एक गुण है शुद्धता जिसे अंग्रेजी में Clean कहा जाता हैं, इस गुण पर हम इस लेख में विचार करेंगे।

Clean का अर्थ शुद्ध होता है और इसी कारण हमारी आध्यात्मिक परिभाषा में यह बात आती है कि जितना चरित्र शुद्ध होगा अर्थात् जितना माया के पाँच विकारों की छाया से बचे रहेंगे, उतना ही सतयुगी दुनिया में श्रेष्ठ कारोबार के निमित्त बन सकते हैं। निर्मल चरित्र का अर्थ सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना ही नहीं है अपितु जैसा कि अव्यक्त बापदादा ने कहा है, ब्रह्माचारी बनना। जैसे ब्रह्मा बाबा ने सभी विकारों एवं प्रलोभनों पर विजय प्राप्त की, ऐसे हमें भी श्रेष्ठ चरित्रवान बनना है अर्थात् ब्रह्माचारी बनना है।

भारतीय संस्कृति में भी शुद्ध चरित्र के बारे में अनेक बातें लिखी हुई हैं जैसे राजा भर्तृहरी को एक श्रीफल मिला था और उस परीक्षा में राजा की रानी पिंगला असफल हुई थी और परिणामस्वरूप राजा ने संन्यास धारण किया, ऐसी बातें शास्त्रों में आती हैं। गौतम ऋषि ने भी अपनी पत्नी अहिल्या को इन्द्र से उत्पन्न हुई समस्या के कारण श्राप दिया और उसे शिला बनाया। श्रीराम के चरण जब उस शिला को स्पर्श हुए तब वह श्रापमुक्त हुई और पुन: अपने मानवीय स्वरूप में लौट आई। ऐसे ही अनुसूईया के बारे में भी शास्त्रों में बताया गया है कि तीन देवतायें उसके सतीत्व की परीक्षा लेने के लिए आये तो उसने तीनों ही देवताओं को बालस्वरूप में परिवर्तन किया और परीक्षा में उत्तीर्ण हुई।

इंग्लैंड के राजवंश की परंपरा में भी श्रेष्ठ चरित्र का ध्यान रखा गया है और इसी कारण वर्तमान रानी एलिजाबेथ द्वितीय के पिता किंग जार्ज के बड़े भाई किंग एडवर्ड, जो उस समय इंग्लैंड के राजा थे, उन्हें लेडी वोलिस सिम्पसन से संबंध के कारण राजगद्दी का त्याग करना पड़ा और उन्होंने फ्रांस में जाकर अपना शेष जीवन लेडी सिम्पसन के साथ व्यतीत किया। ऐसे ही अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन को भी अपने चारित्रिक दोषों के कारण राष्ट्रप्रमुख के पद से इस्तीफा देना पड़ा।

ज्ञानमार्ग में भी ब्रह्मा बाबा के श्रेष्ठ जीवन चरित्र के बारे में हम सब जानते हैं। उनका लौकिक एवं अलौकिक जीवन अत्यंत चरित्र सम्पन्न था। हम सब जानते हैं कि एक बार बाबा जब नेपाल गये थे तो वहाँ के राजा एवं उनके परिवार ने बाबा को मांसाहार आदि कराने का प्रयत्न किया तब बाबा ने उन्हें कहा कि मैं यहाँ ज़ेवर बेचने आया हूँ, अपना ईमान नहीं इसलिए अपने आचरण व चरित्र को मैं शुद्ध ही रखूँगा।

एक बार पूने में मैं और ब्रह्मा बाबा रात को गोलीबार मैदान में पैदल करने गये थे तो मैंने बाबा से पूछा कि आप अपने पूर्व जीवन की बातें सबको क्यों बताते हो? बाबा ने मुझसे पूछा कि बच्चे, आप मुझे ऐसा प्रश्न क्यों पूछ रहे हो? मैंने बाबा को कहा कि बाबा, एक बार मैं एक संन्यासी का प्रवचन सुन रहा था, प्रवचन पूरा होने के बाद मैंने उनके पूर्व जीवन के बारे में उनसे

पूछा तो वे बहुत क्रोधित हुए और कहा कि ऐसा पूछने वाले तुम कौन होते हो! तो मैंने उन्हें कहा कि आपके संन्यासी बनने के मार्ग में जो भी कठिनाइयाँ आईं और कैसे आप उनमें उत्तीर्ण हुए, ये बातें अगर सबको बतायेंगे तो लोगों को भी मार्गदर्शन मिलेगा। इस पर उस संन्यासी ने कहा कि वे अपने पूर्व जीवन के बारे में किसी को कुछ नहीं बता सकते हैं। तब ब्रह्मा बाबा ने कहा कि संन्यासियों के जीवन में कुछ बातें शायद ऐसी हो जाती हैं जो उन्हें छिपानी पड़ती हैं परंतु मेरे पूर्व जीवन में और अब के जीवन में ऐसी कोई बात या घटना नहीं है जिसे मुझे औरों से छिपाना पड़े। मेरा जीवन तो एकदम शीशमहल जैसा पारदर्शी एवं स्पष्ट है और इसलिए मैं अपने जीवन की बातें सबको बताता हूँ। बाबा ने बताया कि अपने पूर्व जीवन में भी वे किसी भी प्रकार के प्रलोभन में नहीं फँसे एवं उनका शुद्ध चरित्र रहा। इसलिए परमपिता परमात्मा ने भी नई दैवी सृष्टि की स्थापना के लिए उनके ही रथ का आधार लिया और उन्हें सारी दुनिया का अलौकिक पिता बनाया।

दादी प्रकाशमणि जी ने भी एक संत सम्मेलन में बताया था कि उन्होंने अपने जीवनकाल में कभी भी झूठ नहीं बोला। उनका जीवन भी आदर्श तथा शुद्ध चरित्र वाला रहा। हमारे प्यारे ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरीजी, दीदी मनमोहिनी जी तथा हमारी अन्य दादियों ने हमारे सामने ऐसा आदर्श रखा जो हमें सदैव श्रेष्ठ, शुद्ध और प्रलोभनों से मुक्त आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

हमारे संगमयुगी जीवन में अनेक प्रकार की समस्यायें, परीक्षायें आती हैं। मिसाल के रूप में, दादी निर्मलशान्ता जी जब कोलकाता सेवार्थ गये थे तो वहाँ पर एक समस्या आई जिसके बारे में उन्होंने ब्रह्मा बाबा को एक पत्र लिखा कि बंगाल में सौभाग्यवती स्त्रियों को मछली खानी पड़ती है। अगर वे नहीं खायें तो उनकी सास कहेगी कि उनका बेटा मर जायेगा और इस कारण सौभाग्यवती स्त्री को मछली खानी ही पड़ती है। ऐसी मछली खाने वाली माताओं को सेवाकेन्द्र पर आकर मुरली सुनने की अनुमति देनी चाहिए या नहीं। उस समय मैं मधुबन में था, बाबा ने मेरे सामने ही वह पत्र पढ़ा और उत्तर मुझसे पूछा। मैंने बाबा को कहा कि नहीं। फिर मैंने कहा कि बाबा आप जो भी उत्तर देंगे वह मुझे भी बताना। तब बाबा ने मुझे कहा कि बच्चे, अशुद्ध आहार लेना, यह इन माताओं की मजबूरी है जबकि कई लोग इसे मौज के कारण खाते हैं तो हरेक का परिणाम अलग-अलग होता है। जैसे परीक्षा में 6 सवाल हैं तो कोई सभी प्रश्नों के उत्तर लिखते, कोई 5 का, तो कोई 4 या 3 का उत्तर लिखते हैं। तो जो जितने प्रश्नों के उत्तर जैसे लिखेंगे उस अनुसार उन्हें वैसे ही मार्क्स मिलेंगे। ठीक उसी प्रकार इस ज्ञान मार्ग में भी जो चार पेपर हैं उनमें से एक पेपर अन्नशुद्धि का है जिसमें इन माताओं को कम मार्क्स मिलेंगे परंतु पवित्रता, ज्ञान की धारणा, योग आदि में अगर ये अच्छी हैं तो उनमें इन्हें अच्छे मार्क्स मिलेंगे। तो क्यों नहीं हम इन माताओं को क्लास में आने दें, उन्हें अन्नशुद्धि के पेपर में कम मार्क्स मिलेंगे।

कई आत्मायें मजबूरी में मजबूर होते हैं और कई मज़बूत बन उनका सामना करते हैं। जो मजबूरी में मज़बूत बन परिस्थितियों का सामना कर सिद्धान्तों की पालना करते हैं उन्हें पूर्ण मार्क्स मिलते हैं और जो मजबूर होते हैं और परिस्थितियों के वश होते हैं उन्हें कम मार्क्स मिलते हैं। जैसे पुष्पशांता दादी एक बहुत अमीर व्यक्ति की पत्नी तथा 6 बच्चों की माँ थी परंतु वह सब बन्धनों से मुक्त हो, निर्मोही बन ईश्वरीय सेवा में समर्पित हो गई अर्थात् उन्होंने मजबूरी की परीक्षा का मज़बूत बन सामना किया और उत्तीर्ण हुई तो उन्हें फुल मार्क्स मिलेंगे। जो जितने परसेन्ट में पास होते उन्हें उतने मार्क्स मिलते हैं।

इस प्रकार ईश्वरीय ज्ञान और

पुरुषार्थ के आधार पर ही राजधानी स्थापन हो रही है। इस राजधानी में महाराजा, महारानी, राजपरिवार, साहूकार, रॉयल प्रजा, साधारण प्रजा, दास-दासी आदि सब प्रकार के कारोबार करने वाले होंगे। ऐसे ही सतयुग के आदि में आने वाले तथा उसके बाद अलग-अलग जन्मों में आने वालों की थोड़ी-थोड़ी उतरती कला होगी। अभी जिस प्रकार का पुरुषार्थ होगा उसी अनुसार हर पेपर में मार्क्स मिलेंगे और वैसा ही पद मिलेगा। इसी के आधार पर बापदादा ने कहा है कि 16000 की माला में पहले दाने और आखिरी दाने में बहुत बड़ा अंतर होता है। श्रेष्ठ कारोबार और श्रेष्ठ जीवन बनाने वाले माला में पहले आयेंगे और उसके बाद नम्बरवार आयेंगे। इस तरह हरेक आत्मा अपने इस ईश्वरीय जीवन में अपना आचरण, व्यवहार कितना शुद्ध रखते, कितना परिस्थितियों में पास होते हैं उस अनुसार उन्हें उनका भविष्य पद मिलता है। सतयुगी और त्रेतायुगी दुनिया में पद तथा जीवन कितना ऊँच और लम्बा होगा, वह हमारे वर्तमान पुरुषार्थ पर निर्भर है।

संगमयुग पर देखते हैं कि कइयों का पुरुषार्थ बहुत ही श्रेष्ठ होता है और उस तीव्र पुरुषार्थ के आधार पर ही उन्हें ईश्वरीय परिवार में बहुत सी ज़िम्मेदारियाँ मिलती हैं और वे उसे स्वीकार कर आगे बढ़ते हैं। हमारी धारणाओं के आधार पर ही सब कार्य होते हैं। बाबा के ज्ञान के आधार पर धर्म की परिभाषा है **धारणा ततो धर्म:** अर्थात धर्म में मुख्य बात धारणा होती है, नाममात्र धर्म नहीं। धर्म जीवन जीने की कला सिखाता है इसलिए सतयुग-त्रेतायुग को धर्मयुग कहा गया है।

इन सब बातों को देखते हुए हमें अपने वर्तमान जीवन के बारे में सोचना है कि हम समर्पित हैं या गृहस्थ में रहते ट्रस्टी जीवन व्यतीत करते हैं परंतु कहाँ तक शिवबाबा की श्रीमत पर चलते हैं। उसके आधार पर हमारे वर्तमान व भविष्य जीवन की प्रालब्ध बनती है। अत: हमें अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए अपने जीवन में हर प्रकार की शुद्धता लानी चाहिए। हमारा जीवन जितना शुद्ध बनेगा उतना निखरेगा। मैनेजमेन्ट गुरुओं ने कहा है कि हमारा जीवन जितना Clean और Clear होगा उतने हम सभी के विश्वासपात्र बनेंगे। जितना हमारा जीवन शुद्ध बनेगा उतना ही सतोप्रधान समयानुसार हम इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आकर अपना पार्ट बजायेंगे।

ईश्वरीय जीवन जैसे कि ओलम्पिक का खेल है जिसमें एक है लम्बी दौड़ और दूसरी है हाई जम्प। सृष्टि रूपी रंगमंच पर 5000 वर्ष की लम्बी अवधि में हम कब आयेंगे उसे कहेंगे लम्बी दौड़ और कितना ऊँच पद पायेंगे वह है हाई जम्प। जैसे ओलम्पिक में पहले नंबर वाला स्वर्ण पदक, दूसरे नंबर वाला रजत पदक और तीसरे नंबर वाला कांस्य पदक लेता है वैसे ही यह संगमयुगी जीवन भी एक रेस, एक खेल है। इसमें भी जो गोल्ड मैडल लेते हैं वे सतयुगी दुनिया में श्रेष्ठ पद प्राप्त करेंगे और स्वर्णयुग में आयेंगे, दूसरे नंबर वाले त्रेतायुग में आयेंगे और बाकी बाद में क्रमश: आते रहेंगे।

इस प्रकार इस ड्रामा की ओलम्पिक रेस के अन्दर हम लॉंग जम्प (long jump) और हाई जम्प (high jump) में कितने नंबर ले सकते हैं, यह हमारे पर निर्भर करता हैं। इसके लिए हमें हमारे वर्तमान ब्राह्मण जीवन को बहुत ही श्रेष्ठ बनाना पड़ेगा, अपना आचरण, व्यवहार अत्यंत शुद्ध बनाना होगा। जितना हम हर परिस्थिति का सामना कर उसमें उत्तीर्ण होंगे, निखरेंगे उतने शुद्ध बनेंगे और सृष्टि के आरंभकाल से आकर अपना राज्य कर सकेंगे। इस शुद्धता को अपने जीवन में अपनाने से ही हम मास्टर ऑफ डिवाइन एडमिनिस्ट्रेशन बनेंगे और हमें सफलता मिलेगी। ❖

व्यर्थ में बुद्धि को उलझाने से आत्मा का तेज नष्ट होता है